**स्वाध्याय ("स्व" का अध्ययन)**

--आत्मावलोकन की सर्वोत्म पध्दति स्वाध्याय ही है।  
--"स्व" का अध्ययन, अर्थात हमारे धर्मग्रन्थों को दर्पण के जैसे उपयोग कर अपने व्यक्तित्व का अध्ययन करना तथा अपने विचारों को धर्मग्रन्थ के सिद्धान्तों जैसा बनाना।  
-- स्वाध्याय इस दृष्टी से करना चाहिए कि हमारे अन्तः करण की वृत्तियाँ और उनसे प्रेरित कर्म भगवान को अर्पित हों।  
--जिन शास्त्रों के द्वारा विवेक और वैराग्य जाग्रत होता है, उनको समझकर पढ़ना और उनके अर्थों पर बारम्बार विचार करना स्वाध्याय कहलाता है।  
--स्वाध्याय का पालन दृंढता से करना अति आवश्यक है।  
--अपने साधन में परम विश्वास होना चाहिए कि इस साधन से ही हमारा कल्याण होगा और इस मार्ग के अतिरिक्त कोई मार्ग नहीं है।  
--मनुष्य जीवन के उद्देश्य को सदैव याद रखते हुए मनन करें कि यह साधन उस परम लक्ष्य के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण है। इसलिए हमें अपना स्वाध्याय नित्य रोज़ाना, तत्परता से नियमपूर्वक करना चाहिए और समय के साथ बढाते रहना चाहिए। इन तीनों बातों का ध्यान रखते हुए हमें यह याद रखना है कि यह हमारे मनुष्य जीवन के लिए महत्वपूर्ण है।  
--किसी भी शास्त्र का अध्ययन करने से पूर्व यह ध्यान रखा जाए कि वह सरल अथवा व्यवहारिक व्याख्या के साथ हो, तभी स्वाध्याय को केवल पाठ के रुप में न रखकर अपने जीवन के हर पक्ष में उतारें और सहायक बनाकर आनन्दमय प्रकाश डालें।  
--अन्य महत्वपूर्ण विषय है कि हम स्वाध्याय परिवार सहित करें, क्योंकि हम जब यह जानते हैं कि वह शास्त्र ज्ञान हमारे लिए लाभदायक है तो उसे अपने परिवार जनों के साथ बांटना अति आवश्यक है। इससे बड़ा सुखद वातावरण भी बन जाता है जब परिवार के सब सदस्य साथ में लक्ष्य प्राप्ति की और बढ़ें। यह हमें generation gap की समस्या से भी बाहर निकालता है। अगर हम केवल व्यक्तिगत स्वाध्याय ही करेंगे तो हमारे विचार  
हमारे परिवार के विचारों से अलग होंगे जिस से मन मुटाव रहेगा ।  
--हमें बच्चों सहित स्वाध्याय करना चाहिए यह अत्यन्त आवश्यक है कि बचपन से ही उन्हें धर्म शास्त्रों के सिद्धान्तों से परिचित कराया जाए।  
--प्रत्येक परिवार की परंपरा चले। इसलिए जीवन को विकास एवं प्रगति की दिशा में अग्रसर बना सकने में परिवार के सभी सदस्य समर्थ हो सकें, इस हेतु उनमें स्वाध्याय की प्रवृत्ति विकसित की जानी चाहिए।  
--स्वाध्याय तभी परिपूर्ण माना जाएगा जब हम उसको अपने दैनिक जीवन में उतारें और अपने परिवार में उसकी चर्चा करते रहें ताकि उसका व्यक्तिगत लाभ समक्ष में आए।  
--शास्त्र का पूरा स्थायी लाभ उसी को मिल सकता है, जो अपने आप को साधक मानकर नाम-जाप, स्वाध्याय और सत्संग को अपने दैनिक जीवन का अभिन्न और नियमित अंग बनाने के लिए कटिबध्द हो।  
 **श्री राधा कृष्ण अर्पणम अस्तु ||**